

१. बरषहिं जलद

– गोस्वामी तुलसीदास

चौपाई

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥  
दामिनि दमक रहहिं घन माहीं । खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ॥  
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ । जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ ॥  
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे । खल के बचन संत सह जैसे ॥  
छुद्र नदी भरि चली तोराई । जस थोरेहुँ धन खल इतराई ॥  
भूमि परत भा ढाबर पानी । जनु जीवहिं माया लपटानी ॥  
समिति-समिति जल भरहिं तलावा । जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ॥  
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होई अचल जिमि जिव हरि पाई ॥

दोहा

हरित भूमि तृन संकुल, समुझि परहि नहिं पंथ ।  
जिमि पाखंड बिबाद तें, लुप्त होहिं सदग्रंथ ॥

चौपाई

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ॥  
नव पल्लव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिले बिबेका ॥  
अर्क-जवास पात बिनु भयउ । जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥  
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी ॥  
ससि संपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ॥  
निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥  
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह-मद-माना ॥  
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं । कलिहिं पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥  
विविध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाई सुराजा ॥  
जहँ-तहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रिय गन उपजे ग्याना ॥



**जन्म :** १५११, बाँदा (उ.प्र.)  
**मृत्यु :** १६२३, वाराणसी (उ. प्र.)  
**परिचय :** गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी भाषा में अनेक कालजयी ग्रंथ लिखे हैं। आप प्रसिद्ध संत, कवि, विद्वान और चिंतक थे।

गोस्वामी जी संस्कृत के विद्वान थे। आपने जनभाषा अवधी में रचनाएँ लिखीं। आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व जब प्रकाशन, दूरदर्शन, रेडियो जैसी सुविधाएँ नहीं थीं, ऐसे दौर में भी आपका ग्रंथ 'रामचरितमानस' जन-जन को कंठस्थ था। आपके द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' को विश्व के लोकप्रिय प्रथम सौ महाकाव्यों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

**प्रमुख कृतियाँ :** 'रामचरितमानस' (महाकाव्य), 'कवितावली', 'विनय पत्रिका', 'गीतावली', 'दोहावली', 'हनुमान बाहुक', 'बरवै रामायण', 'जानकी मंगल' आदि।



### दोहा

कबहुँ प्रबल बह मारुत, जहँ-तहँ मेघ बिलाहिं ।  
जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं ॥  
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम, कबहुँक प्रगट पतंग ।  
बिनसइ-उपजइ ग्यान जिमि, पाइ कुसंग-सुसंग ॥

(‘रामचरितमानस के किष्किंधा कांड’ से)

— ० —



### पद्य संबंधी

प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास रचित ‘रामचरितमानस’ महाकाव्य के किष्किंधा कांड से लिया गया है। यह पद्यांश चौपाई एवं दोहा छंद में है। यहाँ गोस्वामी जी ने वर्षा ऋतु में होने वाले परिवर्तनों का सुंदर वर्णन किया है। उन्होंने वर्षा के साथ-ही-साथ समाज की स्थिति, विविध गुणों-दुर्गुणों को भी दर्शाया है।

उपरोक्त प्रसंग सीताहरण के बाद का है। श्री राम-लक्ष्मण, सीता जी की खोज में भटक रहे हैं। सीता जी के बिना श्रीराम व्याकुल हैं। रामचंद्र जी कहते हैं, “आसमान में बादल घोर गर्जना कर रहे हैं। पत्नी सीता के न होने से मेरा मन डर रहा है। आकाश में बिजली ऐसे चमक रही है जैसे दुष्ट व्यक्ति की मित्रता स्थिर नहीं रहती...”

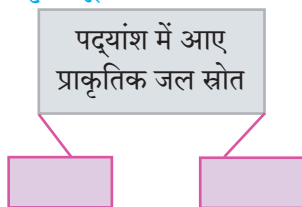
### शब्द संसार

घोरा वि. (हिं.अवधी) = भयंकर  
डरपत क्रि. (हिं.अवधी) = डरना  
खल वि. (सं.) = दुष्ट  
जथा क्रि.वि. (हिं.अवधी) = यथा, जैसे  
थिर वि. (हिं.अवधी) = स्थिर  
नियराई क्रि. (हिं.अवधी) = नजदीक आना  
नवहिं क्रि. (हिं.अवधी) = झुकना  
बुध पुं. (सं.) = विद्वान  
तोराई क्रि. (हिं.अवधी) = तोड़कर  
ढाबर वि. (हिं.अवधी) = मटमैला  
लपटानी क्रि. (हिं.अवधी) = लिपटना  
जिमि क्रि.वि. (हिं.वि.) = जैसे  
बटु पुं. (सं.) = बालक  
बिनसइ क्रि. (हिं.अवधी) = पेड़, वृक्ष

अर्क पुं. (सं.) = मदार (मंदार) का वृक्ष  
उदयम पुं. (सं.) = उद्योग  
कतहुँ-अव्यय. (हिं.अवधी) = कहीं  
सोह क्रि. (हिं.अवधी) = सुशोभित होना  
दंभिन्ह वि. (हिं.अवधी) = घमंडी  
निरावहिं क्रि. (हिं.अवधी) = निराना (खेती की प्रक्रिया)  
तजहिं क्रि. (हिं.अवधी) = त्यागना  
मद पुं. (सं.) = घमंड  
चक्रवाक पुं. (हिं.अवधी) = चक्रवाक पक्षी  
भ्राजा क्रि. (सं.) = शोभायमान होना  
मारुत पुं. (सं.) = हवा  
नसाहिं क्रि. (हिं.अवधी) = नष्ट होना  
निबिड़ वि. (हिं.अवधी) = घोर, घना  
बिनसइ क्रि. (हिं.अवधी) = नष्ट होना

\* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए :



(२) निम्न अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए :

१. संतों की सहनशीलता -----
२. कपूत के कारण कुल की हानि -----

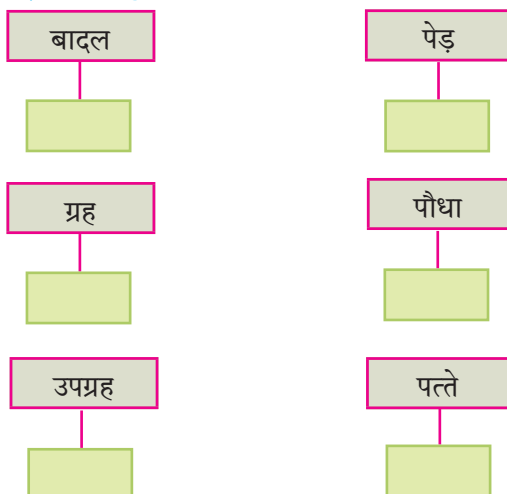
(३) तालिका पूर्ण कीजिए :

इन्हें	यह कहा है
(१) -----	बटु समुदाय
(२) सज्जनों के सद्गुण	-----

(४) जोड़ियाँ मिलाइए :

	‘अ’ समूह	उत्तर		‘ब’ समूह
१.	दमकती बिजली		अ	दुष्ट की मित्रता
२.	नव पल्लव से भरा वृक्ष		ब	साधक के मन का विवेक
३.	उपकारी की संपत्ति		क	ससि संपन्न पृथ्वी
४.	भूमि की		ड	माया से लिपटा जीव

(५) इनके लिए पद्यांश में प्रयुक्त शब्द :



(६) प्रस्तुत पद्यांश से अपनी पसंद की किन्हीं चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए ।



कहानी लेखन :

‘परहित सरिस धर्म नहीं भाई’ इस सुवचन पर आधारित कहानी लेखन कीजिए ।

